मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्ववाद ('विकल्प') के प्रणेता श्री ए नागराजजी द्वारा लिखित कुछ परिचयात्मक लेख

लेखों में प्रयोग हुए कुछ संक्षिप्त परिभाषाएं:

चार अवस्था: पदार्थ (मिटटी, पथर); प्राण (पेढ-पौधे); जीव (जीव जानवर); ज्ञान अवस्था (मानव)

जीवन: मानव में शरीर – भौतिक पक्ष; जीवन – चैतन्य पक्ष, मन का पक्ष

आदर्शवाद: परंपरा अनुसार अध्यात्मवाद, दैय्वीवाद

सर्वशुभ, मानव परम्परा में कैसे बने

एक वाक्य में सह-अस्तित्व विधि से सह-अस्तित्व ही अस्तित्व के रूप में पहचान में आ गयी है| यह घटना 'साधना, समाधान संयम' के रूप में प्राप्त हुई| इसको पाने के लिये स्वाभाविक रूप में किसी न किसी को प्रयत्न करना ही था| इसी क्रम में इसको पाया गया| साधना, ध्यान, समाधि, संयम क्रियाओं का प्रेरणा विगत परंपरा का, आदर्शवाद का रहा है| इसी क्रम में इसे पाकर विकल्पात्मक दर्शन, विचार, शास्त्र को प्रस्तुत किया है जो मध्यस्थ दर्शन, सहअस्तित्ववाद से जाना जाता है | इन आधारों पर संविधान को प्रस्तुत किया है| मानवीय आचार संहिता रुपी संविधान को प्रस्तुत किया| इन सब को पाने के लिये, प्रकट करने के लिये समय तो लगता ही है| हमने समय के बारे में बहुत विचार नहीं किया, कार्य की सफलता की आवश्यकता पर ज्यादा ध्यान दिया| यह पाया गया कि आदर्शवाद के समय से ही मार-काट, युद्ध को अपनाते रहें हैं; उसको अपराध नहीं माना| युद्ध में मरने वालों को स्वर्ग मिलने का आश्वासन दिया है| इस क्रम में मनुष्य में विचार होता ही रहा| युद्ध कहाँ तक न्याय है, इसका झलक आदर्शवाद में आ चुका है| आदर्शवाद में अनेक भाषा प्रयोग हुए, अंततोगत्वा मार-काट,युद्ध ही हाथ लगा, जो मानव कुल के लिये उपयोगी नहीं रहा| अभी अत्याधुनिक युग में मानवीय व्यवस्था पहचानने के लिये दो संस्थाएं तैयार हुआ है| १- 'ग्लोबल हारमनी' के नाम से रशिया में तैयार हुआ है | २- 'ग्लोबल सिटिजन' के नाम से, यह अमेरिका में तैयार हुआ है| इन दोनों संस्था के पास अभी तक यह हस्तगत नहीं हुआ कि हार्मनी कैसे होगा | इसमें यह माना जाता है, जो विकल्प को समझे हैं वे सब, विकल्प से ही इसका आपूर्ति होगा| विकल्प (सहअस्तित्ववाद) को समझा हुआ व्यक्ति धरती पर तैयार हो गये हैं| यह प्रचलित होने के लिये कार्यक्रम शुरू किये हैं| विकल्प अध्ययन रूप में काफी लोग अपना भागीदारी पूरा कर रहे हैं| इसको देखने पर ऐसा लगता है कि कुछ समय पर ही धरती पर विकल्प की

आवश्यकता का अनुभव होगा| अत्याधुनिक शिक्षा के बाद भी विकल्प की आवश्यकता रही है, ये आश्चर्य की बात है| अत्याधुनिक शिक्षा सर्वोपरी सौभाग्यशाली होगा ऐसी कल्पना रही है, परिणाम में ऐसा नहीं हुआ| परिणाम स्वरूप में सभी अपराधों को वैध मान लिया – अपराध को अपराध से रोकना, युद्ध को युद्ध ससे रोकना, गलती को गलती से रोकना | आदर्शवाद कालीन युग में संघर्ष, युद्ध को अपनाया| अत्याधुनिक विधि से व्यापार विधि से सुविधा, संग्रह को माना,जिसकी आवश्यकता रही ही है| संग्रह,सुविधा के साथ इन तीनों को अर्थात लाभोन्मादी अर्थशास्त्र ,भोगोन्मादी समाजशास्त्र , कामोन्मादी मनोविज्ञान इन तीनों भागों को अत्याधुनिक युग अति संतुष्टि से गाते आया है| संतुष्टि जनमानस को नहीं मिला| इसका गवाही भारत में मिल रहा है| अभी ये दोनों संस्था अलग से तैयार हुई हैं| दोनों संस्थाएं विकल्प को समझने के लिये तैयार हो रहा है; क्या कर पायेंगे आगे की बात है| इस क्रम में चलते हुए अभी तक विकल्प का हसरत अध्ययन के पश्चात अपनाना शुरू होता है| सूचना से अध्ययन के प्रति ध्यानाकर्षण होता है, इसको देखा गया है|

मानव जाति ही समझने के लिये एकमात्र इकाई है, इस बात को स्पष्ट करने की कोशिश की है| यह आदर्शवाद में भी स्पष्ट नहीं हुआ, भौतिकवाद में भी स्पष्ट नहीं हुआ| मानव ज्ञानावस्था में होना प्रतिपादित है| उसी के आधार पर यह लेख प्रस्तुत है| यहाँ तक अपने पास गवाहियाँ तैयार हुआ है- मानव ही अध्ययन करता है, मानव ही सोचता है, मानव ही समझता है, मानव ही प्रमाण का आधार है| मानव ही प्रमाण को प्रस्तुत करता है|

धरती पर मानव जात ही इस विकल्प को तैयार किया है| इसके पहले अत्याधुनिकवाद अथवा विज्ञानवाद को प्रस्तुत किया; उसके पहले जंगल युग, पाषाण युग, धातु युग के रूप में इतिहास में बताया है| कबीला, ग्राम युग के बारे में विकल्प विधि से प्रस्तुत हुई| अभी मुख्य रूप में देश रूप में आदमी तैयार हो गये हैं| मानव जाति अनेक, मानव जाति के निवास के देश अनेक हो गये हैं| इसे हर व्यक्ति समझ सकता है| इस ढंग से कोई द्वेष-मुक्ति, युद्ध-मुक्ति का आधार नहीं है| युद्ध-मुक्ति, अपराध-मुक्ति, भ्रम-मुक्ति के बिना मानव जाति का कल्याण नहीं है| इसको भली प्रकार से शोध किया गया है| उक्त तीनों मुक्ति के लिये ध्यान में रखते हुए यह लेख लिखा जा रहा है| - ए.नागराज

मानव में सर्वमंगल

सुख, समाधान को पाने के लिये सदियों से मानव जात प्रयत्न किया है| इस क्रम में मानव केवल जीवों से अच्छा जीने के क्रम में ही रह गया| जीवों से अच्छा जीने के क्रम में आहार, आवास, अलंकार, दूरगमन, दूरश्रवण और दूरदर्शन को ही 'चेतना विकास' का प्रमाण माना है| इसका परम्परा बनाने के क्रम में व्यापार को सार्वभौम माना है| धोखाधड़ी के बिना व्यापर नहीं होता है| धोखाधड़ी के साथ परम्परा बनता नहीं है| फलस्वरूप पुनर्विचार की आवश्यकता है| पुनर्विचार के फलस्वरूप विकल्प, चेतना विकास मूल्य शिक्षा के रूप में प्रस्तुत है| इसका आँकलन करना आवश्यक है क्योंकि धरती बीमार हो गयी है, प्रदूषण छा गयी है| धरती आदमियों के रहने योग्य नहीं रह जायेगी, ऐसा लोगों का कहना है| इस ढंग से मानव कहाँ रहेगा? यदि धरती को मानवों के न रहने योग्य बनाना है तब विकास का क्या मतलब है? विकल्प के अनुसार चेतना विकास का मतलब ही जागृति है| जागृति का मतलब समझदारी, समझदारी का मतलब ईमानदारी, ईमानदारी का मतलब जिम्मेदारी, जिम्मेदारी का मतलब भागीदारी है| इस प्रकार मानव अपने जिम्मेदारियों को समझने एवं निर्वाह करने योग्य होता है|

अभी तक मानव एक दूसरे का शिकायत करना ही जाना है| शिकायत से उपलब्धि क्या है? वह भी केवल भौतिक, रासायनिक वस्तुओं की सीमा में ही सब के सब शिकायतें हैं| जबकि मानव, मानव के साथ जीना कृतज्ञता के साथ होता है| कृतज्ञता ही विश्वास का आधार है| कृतज्ञता के बिना विश्वास पैदा नहीं होता, इसे हर व्यक्ति अनुभव कर सकता है| इस विधि से अभी तक जीवों से अच्छा जीने के क्रम में अथवा जीने के लिये जितना भी प्रयास किया है उसका मूल्यांकन करना ही होगा| संग्रह, सुविधा से मुक्त होकर समाधान, समृद्धिपूर्वक जीना मानव में अथवा सर्वमानव में सर्वशुभ होने का प्रमाण है| यही मानव में सर्वमंगल है|अर्थात सर्वशुभ ही सर्वमंगल है|

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याण हो!

\- ए. नागराज

समस्या या समाधान ?

आदिकाल से ही हर मानव समझदार होने के पक्ष में सोचा है| समझदारी का किसी दूर तक हर व्यक्ति में अभिव्यक्ति है| अभिव्यक्ति के अर्थ में ही समझ को माना है| अभिव्यक्ति सर्वतोमुखी समाधान ही है| सर्वतोमुखी समाधान हुए बिना अभिव्यक्ति होता नहीं| इसी का नाम समाधान दिया है| समाधान पूर्वक जीना एक प्रमाण है| सर्वतोमुखी समाधान होना वैभव है| मानव तृप्ति सर्वतोमुखी समाधान से ही है| समस्या से समाधान होने का सम्भावना नहीं है| समस्या से समाधान को खोजने का प्रक्रिया भी चालू है मानव मस्तिष्क में जबकि समस्या से समस्या ही पैदा होता है न कि समाधान| इसको ऐसा भी कह सकते हैं कि छोटा समस्या को बड़ा समस्या से ढक देना| इसका प्राकृतिक उदाहरण यह मिलता है कि समस्या से समाधान पैदा नहीं होता है| समस्या से समस्या ही पैदा होता है| समाधान ही संतुलन का स्वरूप है| संतुलन लक्ष्य पूर्ति के अर्थ में ही है| समाधान यांत्रिक प्रक्रिया नहीं है| यह संवेदनशील प्रक्रिया है| यांत्रिक प्रक्रिया में यह नाप तौल में आता नहीं| नाप तौल से ही लम्बाई चौड़ाई होती है| इस प्रकार से मानव फंस गया है| विज्ञान विधि नाप तौल से सम्बंधित है| इसी के आधार पर संख्यात्मक गणित को अपनाया है| इसका प्रयोजन विखण्डन में आया है| विखण्डन का परमावधि विघटन ही हुआ| जैसा नाभिकीय विघटन ही आज का नईंधन का प्रधान वस्तु माना गया है| इसको एकत्रित करने का उपाय खोज लिये हैं प्रयोग भी खोजा है| इसमें विडंबना यही है कि शांतिपूर्ण कार्यक्रम के लिये इसका उपयोग होगा, ऐसा कहे हैं जबकि इसका सामरिक तन्त्र में ही सर्वाधिक प्रयोग हुआ है| इसी में से एक भाग ऊर्जा को उत्पादन करने के लिये प्रयोग करते हैं| इससे भारी प्रदूषण उत्पन्न होता है| प्रदूषण के चलते असंख्य रोगों का शिकार हो गया मानव, फसल सब शिकार हो गया, जीव मात्र सब शिकार हो गया| धरती निरुत्पादक होता जा रहा है| धरती में उर्वरकता घटती जा रही है| इसके मूल में सोचने पर पता लगता है कि जंगल से धरती उर्वरक हुआ है| जंगल का नाश आदिकाल से होता आया है, जिसको महान सभ्य युग माना जाता है| किन्तु जंगल का नाश उसी समय से शुरू हुआ है| इस ढंग से जंगल को नाश करने पर धरती में उर्वरकता कम होना स्वाभाविक है| उर्वरकता में क्षारीय, अम्लीय पदार्थ विशेष होता है| इसको सीधाबना कर लोग व्यापार में लगा दिए हैं, जिसे रासायनिक खाद कहा जाता है| रसायन खाद से अनेक रोग पैदा होता है, साथ में कीटनाशक दवा सर्वाधिक हानिकारक वस्तु है| इसको सर्वाधिक व्यापार में लाभ के लिये पैसे वाले करते हैं| उपयोग करने वाले यह सोचते हैं कि खाद को बोरी में भर कर ले जाने वाला बात सुगम हो गया, | इसके प्रयोग से धरती बीमार हो गया| इस बीमारी का नाम है धरती में उपजाऊ शक्ति का क्षीण होना| इस क्रम में मानव अपने को अपराधी स्वीकारना, होना स्वाभाविक रहा| साथ में नाभिकीय उपयोग से जो ऊष्मा पैदा होता है वह धरती में ही रहता है| फलस्वरूप धरती बुखारग्रस्त, तापग्रस्त होता ही है| अभी तक विज्ञानी मानते हैं कि नहीं मानते हैं; पता नहीं| इस आधार पर विज्ञान को सत्य कैसा माना जाय| विज्ञान हर बात को स्पष्ट करने का कथा है, हर बात को यथार्थ में स्पष्ट करना|

स्पष्टता का मतलब यथार्थ ही है| अभी तक यह बात नहीं हो पायी है और गुमराह करना ही हुआ है| नभिकीय प्रयोग में जो ऊष्मा निकलता है वह सब धरती में ही समाता है| इससे धरती में बुखार होना स्वाभाविक हो गया| धरती बीमार होना बुखारग्रस्त होने के रूप में तथा प्रदूषण छा जाना खनिज कोयले, खनिज तेल से होना स्पष्ट हो चुका है| इसमें हम चाहे जितना भी बहस करें, घटना घटित होने का मूल तत्व इतना ही है| इस पर ध्यान देने की आवश्यकता है|

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याण हो!

- ए. नागराज

समझदारी ही सुख

समझदारी से ही कल्याण होगा | समझदारी से ही सुखी समृद्ध होते हैं | समझदारी में वर्तमान में व्यवस्था के रूप में जीते हैं | तभी सह-अस्तित्व को प्रमाणित करते हैं | सुख के चार चरण है, समाधान, समृद्दि, अभय, सह-अस्तित्व | यानि हर मानव में समाधान, परिवार में समृद्धि, समाज में अभय और अस्तित्व में सह-अस्तित्व | यह चारों चीजें आती है तो हम सुखी हो जाते हैं | जब तक यह चारों चीजें नहीं आती हैं तब तक हम प्रयत्न करते रहते है | यह सदा-सदा से हो ही रहा है | इस प्रयत्न के क्रम में ही हम तमाम जप-तप, पूजा-पाठ, योग-यज्ञ कर डाले है | बहुत सारी चीजें, धन-संपदा भी इकट्टा किये है, किन्तु इससे सब लोग तो सुखी नहीं हुए | एक ही परिवार के सभी लोग सुखी नहीं हो पाते है | ऐसा ही समाज में देखने में आता है | सभी के सुखी होने के लिए सभी का समझदार होना आवश्यक है | ऐसा होता नहीं कि एक व्यक्ति ज्ञानी हो जाये और सब को तार दे | हर व्यक्ति को सुखी होना है तो समझदार होना ही होगा | अवसर यह है कि समझदारी सभी को पहुंचाया जा सकता है | समझदारी के लिए पहला चरण है अस्तित्व को समझना | अस्तित्व चार अवस्था में है | पहला पदार्थावस्था, जिसमें मिटटी, पाषाण, मणि, धातु आदि है | यह सब अपने आचरण में प्रमाणित है ही | दूसरी प्राणावस्था, जिसमे सभी वनस्पतियां, औषधियां है | यह सब भी अपने आचरणों में स्वयं प्रमाणित है | तीसरी जीवावस्था, जिसमें मनुष्य को छोडकर सभी जीव-पक्षी आते हैं | यह सभी अपने त्व सहित व्यवस्था एवं समग्र व्यवस्था में भागीदारी के रूप में प्रमाणित है ही | चौथी ज्ञानावस्था है, जिसमें केवल मनुष्य है, जिसको

व्यवस्था में होने में अभी प्रतीक्षा है | अब सोचिये सबसे विकसित अवस्था सबसे पीछे है | क्या मतलब है इसका? ऐसा जीने-रहने पर दुःख नहीं होगा तो क्या होगा?

इसीलिए बात की जा रही है समझदारी कि | तभी व्यवस्था में जिया जा सकता है और तभी सुखी रहा जा सकता है | हमारा चरित्र भी विकसित चेतना के रूप में होने कि आवश्यकता है | आचरण के रूप में हर वस्तु अपनी व्यवस्था को प्रमाणित करतें हैं | मानव भी अपने आचरण में व्यवस्था को प्रमाणित करेगा | इसकी संभावना भी है, प्रयास भी है | इसी के बाद मानव का सुखपूर्वक व्यवस्था में जीना और उसकी परंपरा बनना निश्चित होगा |

- ए नागराज

मानव सुरक्षा चाहता है

आज दिनांक २/१/२०११ के दिन के चिंतन में विकसित चेतना के आधार पर यह सोच विचार स्पष्ट हुआ कि मानव सुविधा संग्रह के लिए युद्ध और संघर्ष की कुछ अनदेखियों के फलस्वरूप धरती असंतुलित होना शुरू कर दिया|धरती तापग्रस्त हो गई,प्रदूषण छा गया,मानव परम्परामें अपराध प्रवृत्तिबढते गया|लक्ष्य केवल सुविधासंग्रह शेष रह गया| यह भौतिकवाद का अध्ययन हुआ|

इसके पहले आदर्शवाद के अनुसार जंगल के ऊपर मानव अनाधिकार विधि से शोषण किया| जिसमें से अपराध रूप में प्रधान वस्तु नाभिकीय वस्तु का उपयोग, दूसरा खनिज तेल, तीसरा खनिज कोयला- यही तीन वस्तु प्रधान है जिससे धरती बीमार हुईप्रदूषण छा गया,यह अनाधिकार विधि से शोषण हुआ|

मध्यस्थ दर्शनसह-अस्तित्ववाद के अनुसार स्रोत को बनाये रखते हुए प्रौद्योगिकीको कार्य रूप में बनाना बताया गया है| ऐसे सार्थकता कीस्थिति में सर्व मानव को एक समानसमझना,स्वीकारना, व्यवहार करना बनता है,फलस्वरूप उत्सव होता है| ऐसे उत्सव कार्यक्रमों के साथ मानव जीना चाहता है| इसे सार्थक बनाने के लिए सिद्धांत रूप में अथवा मूल रूप में “मानव जाति एक”, “मानव धर्म एक”से पारंगत होना आवश्यक है| इससे असंतुलन से संतुलन होना बनता है|

मानव मूल रूप में सुरक्षित रहना चाहता है| इसका इतिहास जंगल युग में पशुओं से जूझना,मानव का मानव के साथ नस्लएवं रंग के साथ जूझना वर्णित है| इसी क्रम में अर्थात जंगल युग से जीवों के साथ जूझने के क्रम में वध, विध्वंसके लिए हथियारों का

निर्माण हुआ तथा जीव संसार के ऊपर प्रयोग किया जिससे जीव संसार नियंत्रित जैसा हो गया|इसी क्रम में मानव सामरिकता में वध विध्वंसको जोड़ने लगा|यद्यपिधातु युग से ही मानव का मानव से सामरिक युद्ध शुरू हुआ|यह तलवार से शुरू हुआ, बन्दूक से होकरमिसाइलमें पहुँच चुका है| इनके लिए जितना भी विस्फोटक है उस पर काबू पाने और लोगों को काबू न कर पाने मेंसंघर्ष जारी है| इन सब बातों का परिशीलन करने पर निष्कर्ष निकलता है कि सभी के मूल में मानव ही है| इन सब से निकलने के लिए चेतना विकास मूल्य शिक्षा का प्रस्ताव है|इसमें मानवत्व के साथ जीने का प्रावधान है| यह अध्ययनगम्य हुआ हैऔ र सर्वाधिक लोगों में स्वीकार होता है| इसे शिक्षा विधि से लोकव्यापीकरण के लिए प्रस्तावित किया है| आज की स्थिति में शिक्षापूर्वक सच्चाइयों को बोध कराना सुलभ हो गया है| सर्वाधिक देशों में शिक्षा उपक्रम का सम्भावना बन चुका है| अपवाद रूप में ही शिक्षा उपक्रम से वंचित गाँव अथवा नगर होगा| इसी आधार पर शिक्षा का मानवीयकरण मानवत्व के साथ होना पाया जाता है|

- ए.नागराज

मानव जाति एक

मानव जाति एक होने का आधार, मानव का बनावट है | मानव बनने में मानव का कोई हाथ नहीं है| अर्थात प्रयास नहीं है| सह-अस्तित्व विधि से मानव की स्थिति बनी हुई है| यही होने का मतलब है| होने के रूप में सह-अस्तित्व को पहचाना जाता है| रहने के रूप में चारों अवस्था अपने अपने आचरण के रूप में रहना देखा जाता है| मानव स्वयं में स्थापित है| सहअस्तित्व ही इसका कारण है| सह-अस्तित्व का स्वरूप पहले स्पष्ट किया गया है| सत्य, व्यापक रुपी सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति है| होने का प्रवृत्ति सह-अस्तित्व में है| केवल सत्तामयता से, केवल वस्तुमूलक विधि से विकास और जागृति होता नहीं| पदार्थावस्था, प्राणावस्था, जीवावस्था, ज्ञानावस्था तक इस धरती पर होने के रूप में प्रमाणित हो चुकी है, जो जड़,चैतन्य प्रकृति के रूप में गण्य है| जड़ प्रकृति दो भाग में गण्य है| चैतन्य प्रकृति दो भाग में गण्य है| इसकी गणनाएँ हो चुकी हैं| मानव ने पा लिया है| गणना करने का अधिकार मानव में देखा गया है|फलस्वरूप पहचानने का नौबत आयी जिसमें से चैतन्य प्रकृति में मानव गण्य है|कुल मिलाकर चैतन्य प्रकृति को चलते फिरते रूप में देखा गया है| जड़ प्रकृति को एक जगह में स्थिर रहने के रूप में देखा गया है| मिट्टी एक ही जगह में रहता है| धातुएं एक ही जगह में रहते हैं| मणियां एक ही जगह में रहते हैं| इस तरह पदार्थावस्था की वस्तुओं

को एक ही जगह में रहने की स्थिति में देखा जाता है| इसी प्रकार प्राणावस्था की वस्तुओं को एक ही जगह पर रहते हुए देखा जाता है| ये दोनों जड़ प्रकृति में गण्य है| अर्थात एक जगह में रहने के रूप में| एक जगह में रहने से निश्चित आचरण देखा गया है| मानव में अभी तक निश्चित आचरण तय नहीं हुआ क्योंकि मानव को जाति के रूप में एक देखना बना नहीं| धर्म के रूप में एक होना बना नहीं, सत्य को देखना बना नहीं| इसी कारणवश अभी तक मानव एक होना सम्भव नहीं हुआ| यह तभी सम्भव है जब मानव जाति एक हो, मानव धर्म एक हो| इसको भले प्रकार से हम समझ पाते हैं, जी पाते हैं, प्रमाणित कर पाते हैं| प्रमाणित होने का आधार केवल जीना है जबकि यह देखने में आया है कि एक भुनगी निश्चित आचरण करता है, मच्छर का स्वरूप एक ही प्रकार से आचरण करता है| मक्खी का स्वरूप एक सा काम करता है| आहार, विहार,व्यवहार में भी एक सा होने के आधार पर एक सा होते हैं| इसी प्रकार मानव आहार, विहार, व्यवहार में एकरूपता को पाने के बाद ही अखण्ड समाज, सार्वभौमता होता है| ऐसी अखण्डता और समाज का व्यवस्था ही सार्वभौम व्यवस्था होना पाया गया है| इस प्रकार से मानव अपने विकास को जागृति के रूप में देखा गया है| मैं भी एक मानव परम्परा का संतान हूँ| मैंने इसको अच्छी तरह से देखा है| आगे मानव का धर्म एक होना बताया गया है|

जय हो, मंगल हो, कल्याण हो|

ए. नागराज

मानव धर्म एक

मानव धर्म एक होने का आधार सहअस्तित्व है| सहअस्तित्व स्वयं में सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति है| यह नित्य वर्तमान है| सदा सदा सह-अस्तित्व वर्तमान है| इसको नकारना बनता नहीं| यह टूटता नहीं, फूटता नहीं, नाप तौल में आता नहीं| समझ में आता है| यही विशेषता मानव में समाया है|

सर्वदेश काल में स्थित, कार्यरत हर मानव में सह-अस्तित्व को समझने का अधिकार रखा है| अधिकार समान है| इसे भूल करके अभी तक समुदाय चेतना में जी कर, जीव चेतना से अच्छा जीने के लिये जिया है| इसमें सफल हो गया| मानव ही एकमात्र इकाई

है जो समझदार होना, ईमानदार होना, जिम्मेदार होना, भागीदार होना होता है| जीवावस्था, प्राणावस्था, पदार्थावस्था में ऐसा अधिकार नहीं है| पदार्थावस्था अस्तित्व धर्मा है| प्राणावस्था अस्तित्व सहित पुष्टि धर्मा है| जीवावस्था अस्तित्व, पुष्टि सहित अस्तित्व धर्मा है क्योंकि जीने की आशा रखता है| जीने की आशा रखते हुये, जीता हुआ हर एक प्रजाति का जीव देखने को मिलता है| इसे समझना मानव का अधिकार है| मानव ही समझने का एकमात्र अधिकारी है| सर्वदेश काल में मानव का जाति एक ही है, धर्म एक ही है| धर्म का मतलब है सुख| मानव सुखधर्मी है| सुखपूर्वकसुखपूर्वक जीना चाहता है| समाधान=सुख=मानव धर्म| इस पर मानव ज्यादा ध्यान नहीं दिया| सुखपूर्वक जीने का आशा अवश्य रखा| यह कैसा हो सकता है| इस पर अध्ययन नहीं हुआ| अभी विकल्प विधि से स्पष्ट हो गया है, समाधान=सुख=मानव धर्म| मानव धर्म एक होना ही सार्वभौमता का आधार है| सार्वभौमता व्यावस्था में सुस्पष्ट होता है| अखण्डता मानव में स्पष्ट होता है| चारों अवस्था के साथ जीना ही सह-अस्तित्व है| सहअस्तित्व में जीना ही परम सत्य है| परम सत्य के साथ मानव सुखी होता है| सहअस्तित्व में अनुभव परम्परा ही समाधान के रूप में प्रमाणित होता है| हर मानव सुख धर्मी है| हर देश कालीय मानव सुखधर्मी है| हर समुदाय मानव सुखापेक्षा रखता है| इस प्रकार सर्वमानव का आधार सर्वदेश काल में एक होना समझ में आता है| यही समझदारी, इमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी के रूप में प्रमाणित होता है| सर्वमानव समझदार होना चाहता है- चाहे ज्ञानी हो, विज्ञानी हो, अज्ञानी हो| उक्त तीनों स्थितियों में अपेक्षा एक ही है, समझदार होना| समझदारी ही ईमानदारी के रूप मे सोचने में आता है| समझदारी अनुभव के रूप में होता है| अनुभव सहअस्तित्व के रूप में होता है| इसे अच्छी तरह से परिशीलन किया है| विकल्प में स्पष्ट किया है| सह-अस्तित्व ही मानव धर्म एक होने का आधार है| मानव धर्म का परम्परा ही सार्वभौमता है| सार्वभौमता विधि से मानव अखण्ड राष्ट्र, अखण्ड समाज अथवा सार्वभौमता विधि से व्यवस्था को पा लेता है| अखण्डता सार्वभौमता ही मानव परम्परा का वरदान है| इसे स्पष्ट कर देना शिक्षा में सम्भव हो गया है| इसे विकल्प विधि से प्रस्तुत किया है| इसे हर मानव परीक्षण कर सकता है| हर देश कालीय मानव परीक्षण कर सकता है| निश्चय कर सकता है| समाधानपूर्वक जीना हर व्यक्ति का अपेक्षा है| समस्या में जीना अपेक्षा नहीं है| सन २००० तक केवल समस्यायों को आंकलित करता ही रहा है| सन २००१ से विकल्प प्रचलित होना शुरू हुआ| अभी तक हजारों मानव विकल्प से सहमत हो चुके हैं| इस आधार पर कहा जा सकता है कि सर्वमानव

में विकल्प की अपेक्षा है| विकल्प रूप में अखण्डता, मानव जाति एक होने के आधार पर अखण्डता है| मानव जाति एक होने के रूप में इसे बनाए रखना ही मानव परम्परा है अथवा विकसित चेतना परम्परा अथवा जागृत चेतना परम्परा है, ऐसा कहा जा सकता है| रहता है विकसित चेतना ही| विकसित चेतना को हम जागृत चेतना कहते हैं| जागृत चेतना ही मानव का आचरण, देव मानव का आचरण, दिव्य मानव का आचरण के रूप में प्रमाणित है| यही मानव परम्परा है| यही विविधता में एकता है| मानव एकता विधि से सामाजिक अखण्डता को पा लेता है| विधि का मतलब न्याय है| न्यायपूर्वक मानव जीना चाहता है| समाधानपूर्वक जीना चाहता है| सत्य सहज विधि से जीना चाहता है| इन तीनों विधि से जीना ही जागृत मानव परम्परा है| मानव जात सुखी होने का एकमात्र रास्ता जागृति है|जागृति को समझना हर मानव का कर्तव्य है| हर देश कालीय मानव का कर्तव्य है| हर समुदाय का कर्तव्य है| कर्तव्य के साथ जीना ही सुख धर्म होना पाया गया है| कर्तव्य के साथ दायित्व निर्वाह होता है| दायित्व सम्बंधों के साथ होता है| सम्बन्ध चारों अवस्था के साथ, द्वितीय सम्बन्ध मानव, देव मानव, दिव्य मानव सम्बन्ध के साथ| मानव चेतना के साथ न्यायपूर्वक जीना बनता है| यह चारों अवस्थाओं के साथ समान है| इसका आधार मानवीयतापूर्ण आचरण ही है| विकल्प विधि से मानवीयतापूर्ण आचरण को बताया गया है| स्वधन,स्वनारी/स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्य व्यवहार के रूप में मानवीयतापूर्ण आचरण होना कहा है| इसमें से हर नर, नारियाँ विवाह को स्वीकार कर सकते हैं, विवाह को नहीं भी स्वीकार कर सकते हैं|विवाह को न स्वीकारने पर भी स्वधन रहता ही है, दयापूर्ण कार्य व्यवहार रहता ही है| इन दोनों विधा से जीना ही मानव चेतना है| दूसरे क्रम में विचार विधा से जीना| विचार विधा में सह-अस्तित्वपूर्ण आचरण को प्रस्तावित करना होता है| मनुष्येतर तीनों अवस्थाओं में आचरण निश्चित है| मानव ही अपने आचरण को पहचानना शेष है| अभी तक मानव जीवों से अच्छा जीने के लिये जिया है| इसमें सफल हो गया है| यह सफलता आहार, आवास, अलंकार, दूरगमन, दूरश्रवण, दूरदर्शन के रूप में स्पष्ट हो गए है| क्रियान्वयन हो गये हैं, सब को समझ में आता है| अशेष मानव, मानवीयतापूर्ण आचरण को सर्वदेश काल में एक रूप में पाने के लिये आहार, आवास, अलंकार, दूरगमन, दूरश्रवण, दूरदर्शन सहित स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्य व्यवहार के रूप में जीना होता है| यह समझदारी के साथ ही आता है अथवा समझदारी के साथ सफल होता है| इसे प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक देश काल में प्रमाणित कर सकता है| इस प्रकार मानव धर्म एक होना प्रमाणित होता है| समाधान=सुख =मानव धर्म।

जय हो, मंगल हो, कल्याण हो|

ए. नागराज

मानव ही सुखी होकर व्यवस्था में जीता है

मानव सुखी होना विकसित चेतना विधि से ही होता है| विकसित चेतना ही मानव चेतना है| मानव चेतना ही देव चेतना, दिव्य चेतना के रूप में प्रमाण है| यही जागृत चेतना का प्रमाण है| जागृत चेतना ही मानव चेतना रूप में प्रमाण है| जागृत चेतना अभी तक मानव परम्परा में आया नहीं| विकल्प रूप में प्रस्ताव है| प्रस्ताव रूप में प्रस्तुत विकल्प अपने में अनुभवमूलक विधि से ही जागृत चेतना का प्रमाण है| अनुभव समझदारी का फलन है| समझदारी अध्ययन से होता है| अध्ययन शब्दों के अर्थ में समाई है| दूसरा विधि से विकल्पात्मक प्रस्ताव के शब्दों में समाई है| इस क्रम में जागृत चेतना का अनुभव, प्रमाण परम्परा में होना सम्भावित है| इसीलिये प्रस्ताव रखा है| प्रमाण के बिना परम्परा होता नहीं| अभी तक मानव परम्परा अर्थात प्रचलन विधि से परम्परा, दूसरा विधि से आहार, निद्रा, भय, मैथुन विधि से परम्परा; यही जीव चेतना का आधार है| जीव चेतना विधि से मानव परम्परा बनता नहीं| अभी भय एक समुदाय से दूसरा समुदाय के साथ बना ही है| इसी क्रम में हर समुदाय सामरिक तंत्र में व्यस्त होना बना है| सामरिक तन्त्र मनुष्य की परम्परा में ही है| जबकि ये सामरिक अर्हता में विकास अथवा गुणात्मक परिवर्तन अथवा विनाशात्मक परिवर्तन इस विधि से हुई| जंगल में रहते जीवों से जूझते रहा, जीवों से जूझने के क्रम में बन्दूक और बारूद की बात आयी| यही बंदूक, बारूद जीवों के प्रति आश्वस्त होने के उपरांत मानव के साथ अनेक नस्ल, रंग के रूप में देखने को मिलने वाले मानव भौगोलिक परिस्थिति के अनुसार नस्ल, रंग प्राप्त किया| इस क्रम में चलता रहा मानव| जीवों के साथ संघर्ष कम होने के बाद मानव के साथ संघर्ष शुरू हुआ| मानव के साथ संघर्ष ही युद्ध के रूप में प्रमाणित हुआ| युद्ध विधि से जितने भी नभिकीय प्रयोग हुआ उसके आधार पर धरती बीमार हो गयी| नाभिकीय प्रयोग ही धरती को बीमार करने में समर्थ है| नाभिकीयता का

सुरक्षा होना ही मानव का सुरक्षा है| इस विधि से मनुष्येतर तीनों अवस्थाएं नियंत्रित होना आवश्यक है या आवश्यकता आ गयी| इसका उपाय केवल चेतना विकास ही है| चेतना विकास विधि से ही मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना ये तीनों प्रमाणित होते हैं; जिसमें से देव चेतना विधि से नियम, नियंत्रण, संतुलन का अध्ययन है| इस क्रम में अर्थात विकल्पात्मक क्रम में मानव ही अन्य तीनों अवस्थाओं में नियंत्रण कर पाता है जिसमें से जीव जातियों में क्रूर जीवों का नियंत्रण आवश्यक है, उसको पाता है| इसे पाने से मानव जीव संसार से निर्भय होकर काम कर सकता है| मानव के साथ निर्भयता के साथ काम करने से अखण्डता, सार्वभौमता सफल होना सम्भव है| इस क्रम में मानव ही ज्ञानावस्था में होना प्रधान बात है| ज्ञानावस्था में होने के आधार पर ही अन्य तीनों अवस्थाओं में नियम, नियंत्रण, संतुलन सार्थक होना पाया जाता है| संतुलन का अंतिम स्वरूप प्रकृति में संतुलन, चारों अवस्था में संतुलन, मानव जाति एक, मानव धर्म एक होने का अध्ययन सुलभ होने से होता है| अध्ययन सुलभ होने से प्रकृति का नियंत्रण हो पाता है| दूसरा भाषा में विकल्पात्मक अध्ययन सुलभ होने से चारों अवस्था में संतुलन सम्भव है| अध्ययन और पठन में अंतर है| पठन भाषा का होता है| काम तकनीकी का होता है| समझदारी जीने का होता है| जीने का मतलब प्रमाणित होने से है| प्रमाणित होने का मतलब सोचने से ही जागृति समझ में आती है| चेतना विकास ही जागृति है| जागृतिपूर्वक ही मानव अखण्डता, सार्वभौमता, स्वतन्त्रतावादी घटनाओं से सम्पन्न हो पाता है| दूसरा कोई विधि नहीं है अभी तक| आगे अखण्डता, सार्वभौमता सर्वसुलभ होने के उपरान्त ही आगे सोचने की बात आती है| इसके पहले विकल्प के विपरीत यदि कोई परिस्थिति निर्मित करता है, वह जीव चेतना के समान ही है| पैसे के लिये परिवर्तन सोचने पर जीव चेतना ही होता है| जीवों से अच्छा जीने के लिये होता है| जीवों से अच्छा जीने मात्र से जागृत हो गया, ऐसा कुछ नहीं है| जीव चेतना ही रहता है| तरीका जीवों से अच्छा हो जाता है| जीव संसार भी शाकाहारी है, मांसाहारी है| मानव जात भी शाकाहारी है, माँसाहारी है| इस क्रम में मानव को जीव कहना बना है| जीव कहने मात्र से परिस्थितियां बदलता नहीं अथवा जागृति हाथ लगता नहीं| विकल्प

विधि से ही जागृति हाथ लगता है| जागृतिपूर्वक ही मानव, मानवत्व सहित जीना बनता है| मानवत्व ही चेतना विकास का प्रमाण है| यही मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना है| दिव्य चेतना अनुभव प्रधान है| देव चेतना अनुभव सम्मत विचार विधि से होता है| विचार सम्मत विधि से व्यवहार होता है, न्याय होता है| न्याय, मानव चेतना विधि से, देव चेतना विधि से समाधान, अनुभव सम्मत विधि से सह-अस्तित्व प्रमाण हो जाता है| इसको भले प्रकार से जाँचा है| इसको जांचने पर पता चला, मानव निरंतर सुखी होने के लिये विकसित चेतना ही एकमात्र आधार है| इस वर्तमान तक अर्थात सन २००० तक मानव जात न्यायालयों को तैयार किया| न्यायालय में न्याय नहीं है| इसको इस प्रकार से जांचा है; धरती पर एक सौ से अधिक संविधान बना है अर्थात देश बना है, समुदाय बना है, इन्हें राष्ट्र भी कहते हैं| इस क्रम में १०० से अधिक संविधान लिखने के उपरांत भी न्याय का अता-पता नहीं है| अभी तक न्यायालयों में न्याय का अभाव है| विकल्प से ही यह पूरा हो पाता है| कार्य व्यवहार विचार सम्मत, विचार अनुभव सम्मत, अनुभव सह-अस्तित्व सम्मत होने के आधार पर जो कुछ भी कार्य व्यवहार होता है, उसमें न्याय चेतना सफल हो जाता है| कार्य मनुष्येतर प्रकृति के साथ है, उत्पादन के अर्थ में| व्यवहार मनुष्य के साथ है न्याय के अर्थ में| न्यायपूर्वक मानव जी पाना ही अखण्डता का आधार है| मानव ही अखण्डता का अनुभव कर सकता है| और तीनों प्रकृति में ये आधार नहीं है| मनुष्य सर्वदेशकाल में सुखी होना चाहता है| इसका स्वरूप ही अखण्डता, सार्वभौमता है| अखण्डता में नित्य उत्सव है| मानव जात ही अखण्ड समाज को पाता है| मानव में ज्ञान का प्रकाश होना, दूसरा भाषा से मानव परम्परा में ही अखण्डता का प्रमाण होना सम्भव है| ज्ञान विधि से ही यह सम्भव है| समुदाय विधि से यह सम्भव नहीं है| इतने लम्बे समय से अर्थात मानव जब से धरती पर अवतरित हुआ तब से अभी तक अर्थात २०वीं शताब्दी तक मानव अखण्डता को नहीं प्राप्त किया| समुदाय को प्राप्त किया है| हर व्यक्ति अभी तक व्यक्तिवाद और समुदाय तक ही सोच पाता है, जी पाता है, कर पाता है| इस आधार पर व्यक्तिवाद, समुदायवाद ही हुआ| व्यक्तिवाद, समुदायवाद अखण्डता से दूर है| अखण्डता की अपेक्षा मानव में है| समुदाय में अखण्डता का अपेक्षा करता

है| हर एक संविधान अपने को अखण्ड और सार्वभौम कहता है| जितना समुदाय है सभी अखण्ड और सार्वभौम है, ऐसा कहा जाता है| ये कहने मात्र से कुछ सार्थकता नहीं हुआ, बल्कि संघर्ष, युद्ध में ही सिद्ध हुआ| संघर्ष, युद्ध दोनों अखण्डता, सार्वभौमता के विपरीत है| यह कार्य रूप में सर्वोपरि मानकर के हर समुदाय अपना संविधान बनाया है जिसके लिये सर्वाधिक सुविधा प्रस्तुत करने के लिये कोशश करता है| इसी बीच शासन कहलाता है| शासन को निर्वाह करने वाले सर्वाधिक लोगों में सर्वाधिक सुविधा होने की कल्पना है| इस ढंग से राजनैतिक विधा में सर्वाधिक सुविधा जोड़ना बना| इसके लिये परम्परा में पाये जाने वाले आर्थिक विधि से किसी एक हद तक होने के बाद सरकार के लिये अथवा शासन के लिये कुछ अंश को देना पड़ता है| जिसको स्वेच्छा से भी होता है, बल पूर्वक भी होता है| इन दोनों विधि से पाया हुआ धन को राज पुरुषों के साथ व्यय करना सर्व प्राथमिकता बना है| इसको भले प्रकार से देखा जा सकता है, हर व्यक्ति समझ सकता है| इस क्रम में अर्थात इस कार्यक्रम में बल ही प्रधान है| शासन को सर्वोपरि बलशाली माना जाता है, व्यक्ति को नहीं माना जाता| जब तक तलवार से युद्ध होता रहा, तब तक भुजबल माना जाता है| जब से तलवार का युद्ध समाप्त होगया; बंदूक का युद्ध आ गया, बारूद का युद्ध आ गया, मिसाइल का युद्ध आ गया| इसमें बाहुबल का कोई अर्थ नहीं रहा| तकनीकी का अर्थ रहा| तकनीकी को अपंग लोग भी प्रयोग कर सकते हैं| तलवार, युद्ध तक पुरुष प्रधान रहा| उसके बाद ही बंदूक, बारूद, मिसाइल युग आने के बाद नर नारियों में समानता की कल्पना हुई| इस कल्पना के अनुसार मानव जात अभी तक नर-नारी में समानता का बिंदु को पहचाना नहीं| अभी तक पैसा दोनों जात के पास होने से समानता मानता है| विकल्प विधि से समझदारी होने से समानता होता है| समझदारी शिक्षा विधि से सबको पहुँचता है| पैसे की समानता सब में हुआ नहीं| चाहते हैं सब समानता| समझदारी में ही नर-नारी में समानता है| कार्य-व्यवहार में समानता है, व्यवस्था में समानता है| कार्य-व्यवहार में समानता का होना सम्भावित है| इस क्रम में मानवत्व का आवश्यकता बन जाता है| मानवत्व के रूप में चेतना है| विकसित चेतना ही जागृत चेतना है| इस विधि से मानव अपने में मानवत्व का स्वत्व सम्पन्नता का अनुभव कर सकता है| विकसित चेतना विधि से ही मानवत्व सम्पन्न होना बनता है|

तकनीकी विधि से हुआ नहीं अथवा आदर्शवादी विधि से, रहस्यवाद से हुआ नहीं| आदर्शवादी विधि से ही रहस्य बना हुआ है| रहस्यवश ही आदर्शवाद शिक्षा में प्रचलित नहीं हो पाया| तकनीकी विधि से शिक्षा प्रचलित हो गयी| अब नर-नारी में समानता के आधार में नौकरी ही एकमात्र रास्ता हुई| नौकरी करता हुआ मानव प्रेरक से अधिक कुछ बन नहीं सकता| विकल्प विधि से इसे देख लिया गया है| जब तक मानव समाधान, समृद्धि सम्पन्न नहीं होगा तब तक जीने का अर्थ होता नहीं| अर्थात समझदारी से जीने का अर्थ बनता है| समझदारी से जीना विकल्प विधि से ही है| विकल्प विधि से ही अखण्डता, सार्वभौमता होता है, दूसरा विधि से होता नहीं| अभी तक हर समुदाय को अखण्ड, सार्वभौम कहा जाता है किन्तु रहता नहीं| अखण्ड, सार्वभौम होने के आधार पर ही समाधान, समृद्धि, अभय सह-अस्तित्व सुलभ होना होता है| धर्म रूप में समाधान होता है; क्योंकि समाधान बराबर सुख, समस्या बराबर दुःख होना देखा गया है| इस क्रम में समाधान=सुख=मानव धर्म कहा गया है विकल्प में| विकल्प विधि से ही समझदारी समझ में आता है| समझदारी का स्वरूप चेतना विकास ही है| विकसित चेतना ही मानवत्व है| मानवत्व ही मानव, देव मानव, दिव्य मानव के रूप में प्रमाणित होता है| इस प्रमाण के आधार पर अखण्डता, सार्वभौमता दोनों प्रमाणित होता है| सामाजिक अखण्डता, व्यवस्था में सार्वभौमता होता है| अखण्डता में ही नित्य उत्सव रूप में मानव परम्परा का होना देखा जा सकता है| सार्वभौमता रूप में नियम, नियंत्रण, संतुलन रूप में मनुष्येतर प्रकृति को देखा जा सकता है| न्याय, धर्म, सत्य के रूप में मानव परम्परा का होना देखा जा सकता है| यही मुख्य बात है| इसी विधि से मानव, मानवत्व को प्रमाणित कर पाता है| प्रमाण केवल आचरण के रूप में होता है| भाषा के रूप में प्रमाण नहीं होता है| अभी तक जबरदस्ती यही है कि भाषा ही प्रमाण है| आदर्शवाद, भाषा को परम कहा| इस क्रम में मानव कुछ नहीं पाया अर्थात इन दोनों क्रम में मानवत्व का प्राप्ति नहीं हो पाया| इसीलिये विकल्प की आवश्यकता आई| आवश्यकता विधि आने से विकल्प प्रस्तुत हुआ| विकल्प के आधार पर जीने से मानव, मानवत्व रूपी स्वत्व को प्रयोग कर सकता है| यह हर देश कालीय मानव के अधिकार की बात है| इसी विधि से अखण्डता

समझ में आता है| अखण्डता सार्थक होने के पश्चात ही अखण्ड समाज व्यवस्था की बारी आती है| अखण्ड समाज व्यवस्था होने के क्रम में चारों अवस्था के साथ व्यवस्था होता है| यही सार्वभौम व्यवस्था कहलाता है; जिससे मानव सुखी होना ही मुख्य बात है| इसी के लिये मानव प्रयत्न करता रहा है| अर्थात सुखी होने के लिये मानव हर तरीके से प्रयत्न किया| इसी क्रम में विकल्प प्रस्तुत हुआ|

जय हो, मंगल हो, कल्याण हो |

ए. नागराज